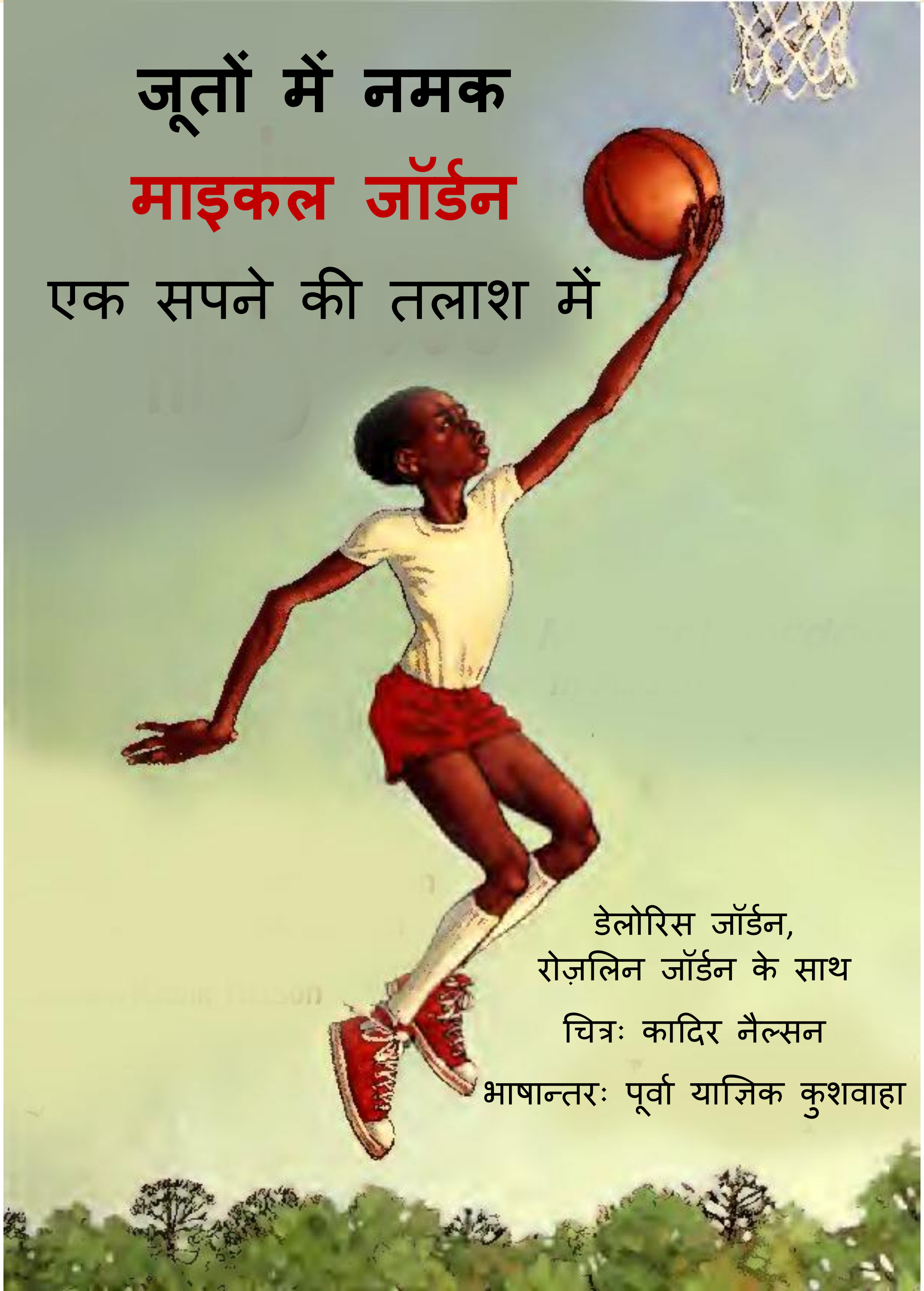

जूतों में नमक

माइकल जॉर्डन

एक सपने की तलाश में

डेलोरिस जॉर्डन,
रोज़लिन जॉर्डन के साथ

चित्रः कादिर नैल्सन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जूतों में नमक

माइकल जॉर्डन

एक सपने की तलाश में

लेखनः डेलोरिस जॉर्डन, रोज़लिन जॉर्डन के साथ

चित्रः कादिर नैल्सन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरी उम्मीद यह है कि इस पुस्तक के पाठक और श्रोता इससे प्रेरणा ले अपने सपनों का पीछा कर सकेंगे। ठीक जैसे माइकल ने किया था - अपना लक्ष्य तय कर, उसे पाने के लिए कड़ी मेहनत कर, और पूरी तरह समर्पित बन। जब हम यह सब करते हैं केवल तब ही हमारे सपने साकार हो सकते हैं और सचमें होते भी हैं। इसी कारण से मैं यह पुस्तक उन अनेक बच्चों को समर्पित करती हूँ, जो कहते हैं कि "मैं यह कर ही नहीं सकती/सकता," या "काश मुझमें यह प्रतिभा होती", "काश खुदा ने मुझे यह तोहफ़ा दिया होता!"

मैं उनसे कहना चाहती हूँ "तुम सब प्रतिभाशाली हो, खास हो। खुदा की तुम सबके लिए एक योजना है; खुद में भरोसा रखो और जाओ अपने सपने का पीछा करो।"

- डी.जे.

हरेक उम्दा और सटीक तोहफ़ा ऊपर से ही आता है। सपने देखने, भरोसा कर पाने, और इस धरती पर होने के तोहफे के लिए मैं खुदा की शुक्रगुज़ार हूँ। मैं यह क़िताब उन सभी बच्चों को समर्पित करती हूँ जो गरुड जैसे पंख पाने और ऊँचे उड़ने का मंसूबा और इरादा रखते हैं। खुदा के फ़जल से तुम उड़ सकोगे। सो उड़ो।

- आर.एम.जे.

मॉम, डैड, सलिहा, अमीन और शेडिया के लिए।

- के.एन.

माइकल को बास्केटबॉल खेलना बेहद पसन्द था।

हर शनिवार वह अपने बड़े भाइयों, लैरी और रॉनी के पीछे-पीछे पार्क जाया करता था। इस उम्मीद से कि शायद वे उसे भी खेलने दें। और अगर जिनके साथ वे अमूमन खेला करते थे, उनमें से कोई न आता, तो वे उसे खेलने भी देते थे। पर एक समस्या थीः उसका नाम था मार्क। वह बास्केटबॉल खेलने वालों में सबसे लम्बा लड़का था।

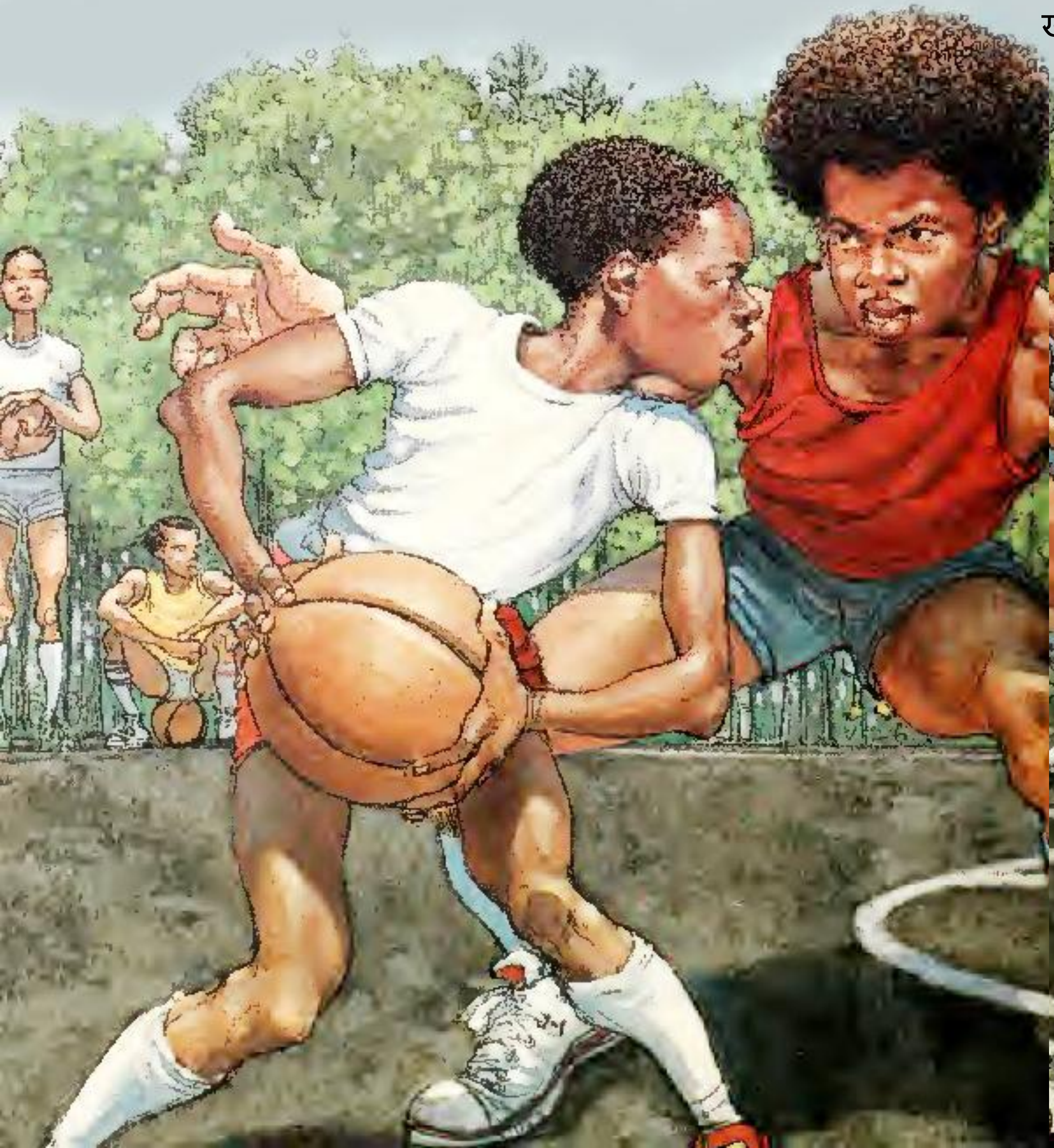

''क्या बात है माइकी? कुछ ज़्यादा ही ठिगने नहीं हो क्या?'' मार्क ने माइकल के चेहरे के सामने हाथ नचाते तंज कसा।

''अरे इधर!'' लैरी चीखा। पर जब माइकल ने गेंद उछाली मार्क के लम्बे हाथ न जाने कहाँ से आए और माइकल की उछाली गेंद उलटी ही तरफ चली गई, और मार्क की टीम के एक खिलाड़ी ने उसे रोका और बास्केट में डाल दी। और बस यों ही खेल खत्म हो गया!

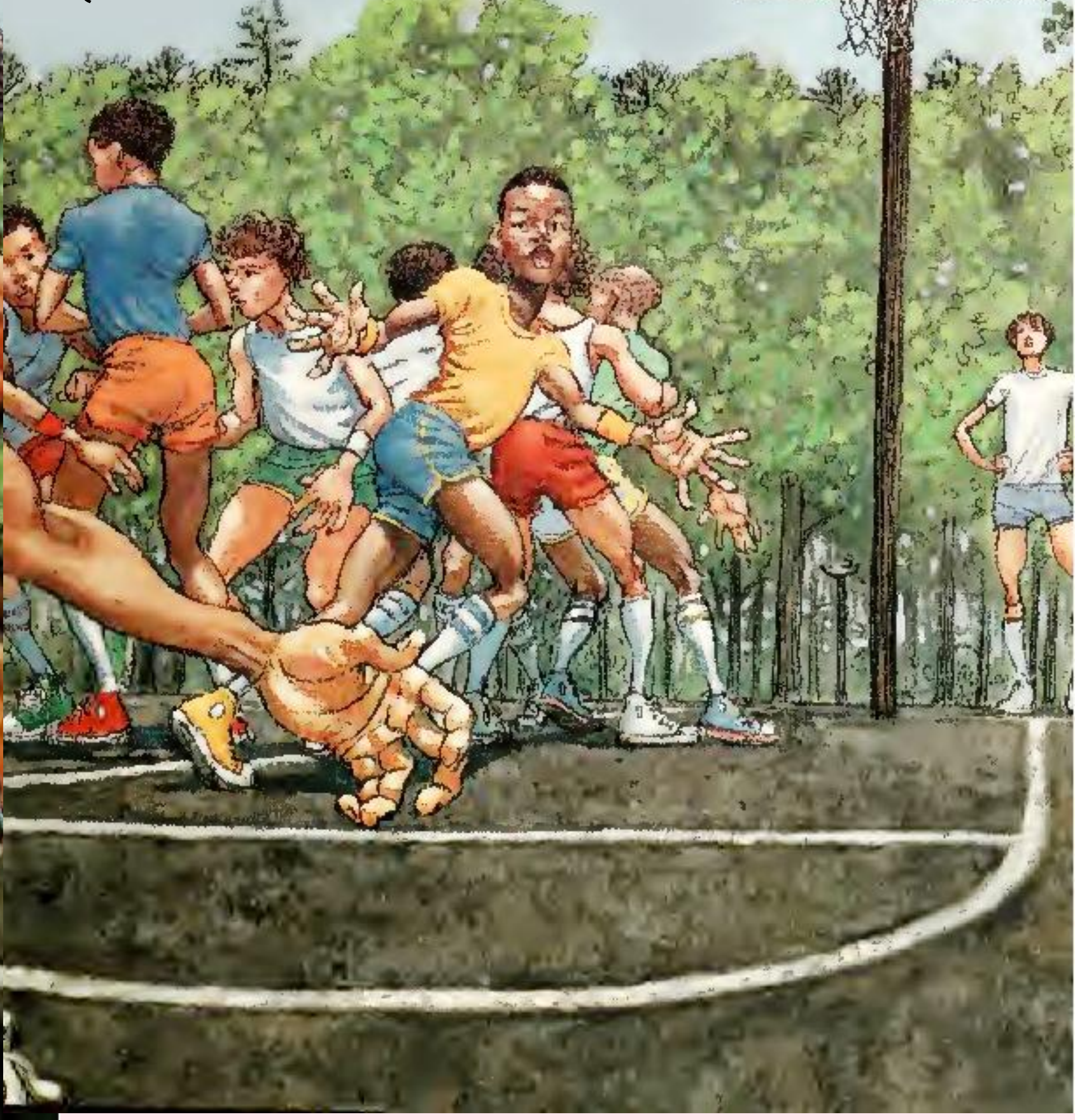

“मैं सचमें माफ़ी चाहता हूँ! अगर मैं लम्बा होता तो ऐसा न होता,” घर के रास्ते भर माइकल लगातार माफ़ी मांगता रहा। हालांकि उससे कोई नाराज़ न था।

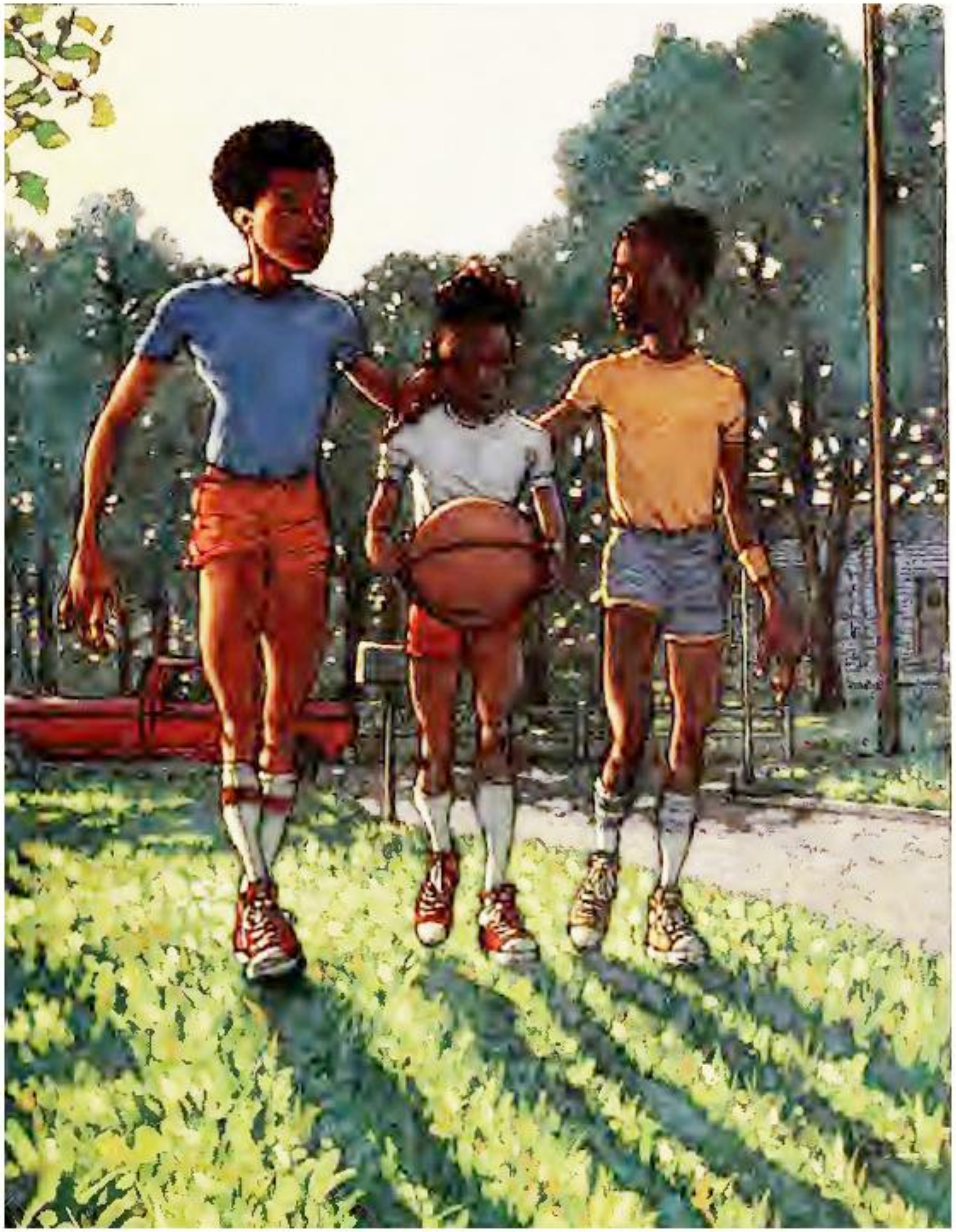

माइकल के सबसे बड़े भाई रॉनी ने उसे भरसक दिलासा देने की कोशिश की, “अरे छोटू तुमने आज अच्छा खेला। फिक्र न करो, हम अगली बार जीतेंगे।”

जब वे घर पहुँचे माइकल रसोई में घुसा, जहाँ ममा रात का खाना बना रही थीं। ममा ने भांप लिया कि माइकल आज भी मायूस है।

"क्या तुम लोग आज फिर हार गए?" ममा ने पूछा।

माइकल ने हाँ में सिर हिलाया।

वह मिनट भर बिलकुल चुप बैठा रहा। तब बोला, "ममा, मैं लम्बा कैसे हो सकता हूँ?"

ममा को कई सवालों के जवाब पता थे। पर यह सवाल कठिन था। वे कुछ पल चुप रहीं, उन्होंने पक रही मुर्गी में कुछ नमक और काली मिर्च बुरकी। तब वे मुस्कुराईं। माइकल की ओर देख कर बोलीं, "नमक।"

"नमक?" माइकल ने ममा को घूरा।

"हाँ नमक, तुम्हारे जूतों में। हम तुम्हारे जूतों में नमक बुरकेंगे और रात को एक दुआ बोलेंगे। तुम्हें पता चले उसके पहले ही तुम लम्बे हो जाओगे!" ममा ने जवाब दिया।

"मेरे जूतों में नमक?" माइकल ने मन ही मन कहा। ज़ाहिर है ममा उसकी टांग खींच रही होंगी। वह खिड़की से बाहर झांक यह समझने की कोशिश करने लगा कि जूतों में पड़ा नमक उसे लम्बे होने में भला कैसे मदद करेगा।

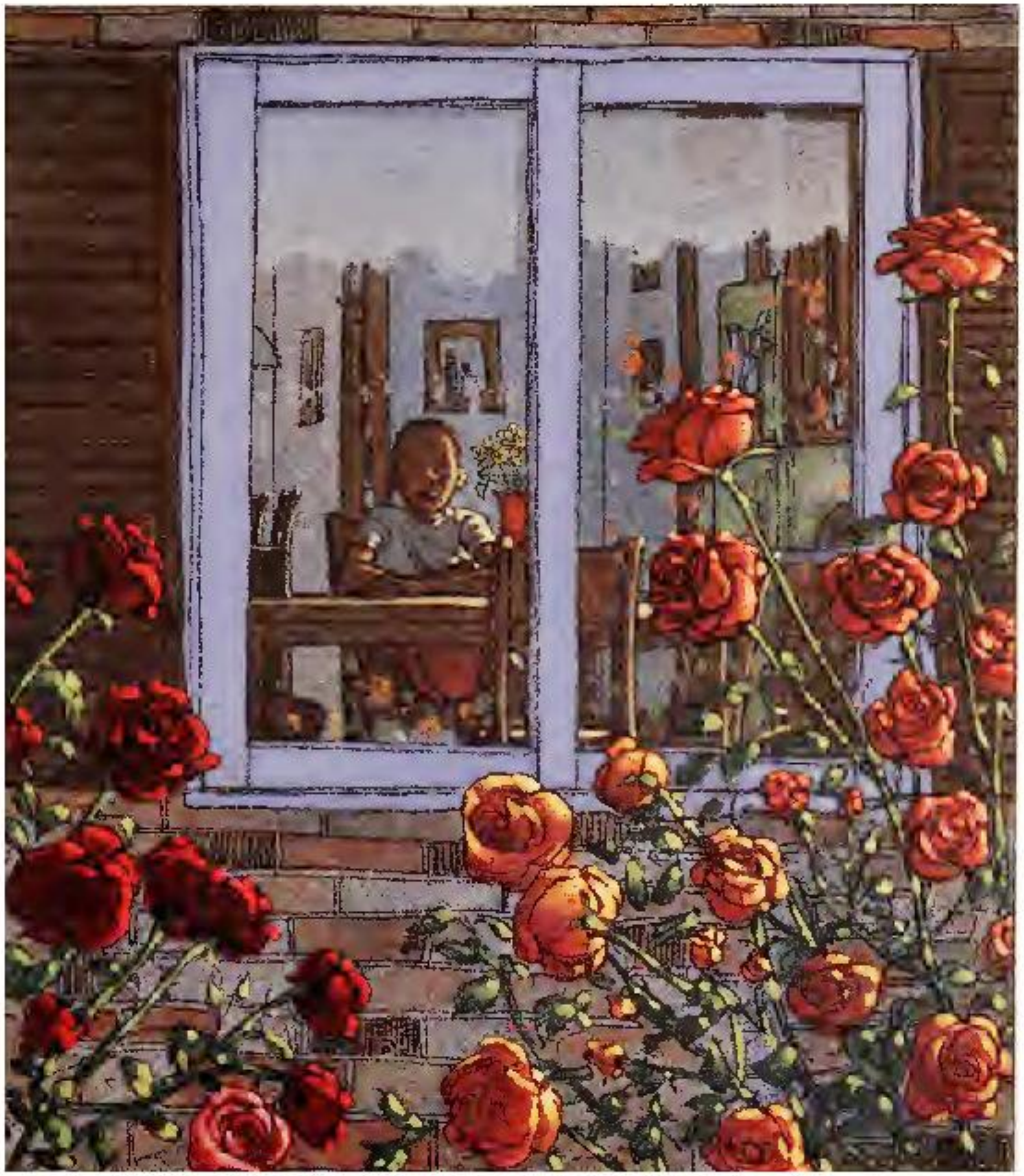

माइकल ने ममा के बगीचे में उगे गुलाब के पौधों पर ग़ौर किया। वे बाड़ तक लम्बे हो चुके थे और कई रंगों में फूल रहे थे। उसने सोचा, मुझे याद है जब ममा ने पहले-पहल ये पौधे रोपे थे। माइकल का चेहरा चमक उठा। अगर ममा इन पौधों को लम्बा कर सकती है, तो शायद वह सही कह रही हो। हो सकता है मेरे जूतों में पड़ा नमक लम्बा होने में मेरी मदद कर सके।

उत्तेजित हो माइकल ममा की ओर मुड़ा और तमाम सवाल करने लगा। ''ममा इसमें कितना समय लगेगा? और तुम्हारे ख़याल से मैं कितना लम्बा हो जाऊँगा?''

ममा मुस्कुराईं और उसके पास बैठ उसे समझाने लगीं। ''यह नुस्खा काम करे इसके लिए ज़रूरी यह है कि तुम धीरज रखो और वह मानो जो मैं तुम्हें कहूँ, और हर रात अपनी दुआ बोलो।''

ममा की बात ध्यान से सुनने के बाद माइकल ने हाँ में सिर हिलाया। ''ठीक है ममा, मैं धीरज रखूंगा। पर दुआ बोलने से इसका क्या ताल्लुक है?''

''पूरा ताल्लुक है,'' ममा ने जवाब दिया। तब ममा ने उसे गले से लगाया और बोलीं, ''अब जाकर अपना हाथ-मुंह धो लो। और अपने भाई-बहनों से खाने के लिए तैयार हो जाने को कहो।''

माइकल झपट कर रसोई से भागा, इतनी तेज़ कि अन्दर आ रहे अपने डैडी से टकरा उन्हें गिरा ही देता। ''अरे, इसे भला क्या हुआ?'' डैडी ने पूछा।

''वही जो हमेशा होता है,'' ममा हंसीं। ''वह सपने का पीछा कर रहा है।''

बाद में खाने के दौरान ममा ने ग़ौर किया कि माइकल कुछ खा ही नहीं रहा था। वह अपने लम्बे हो जाने के सपने में खो चुका था।

''माइकल, पहली चीज़ पहले। अगर तुम खाओगे ही नहीं तो लम्बे भी नहीं हो सकोगे, खास तौर से सब्ज़ियाँ,'' ममा ने कहा।

''पर मुझे सचमें भूख ही नहीं है,'' वह बोला।

ममा ने आँखें चढ़ा उसे सख़्त नज़र से देखा।

माइकल ने फौरन अपना कांटा उठाया और खाने लगा। पाँच ही मिनट में उसकी प्लेट साफ थी, और वह और खाना मांग रहा था।

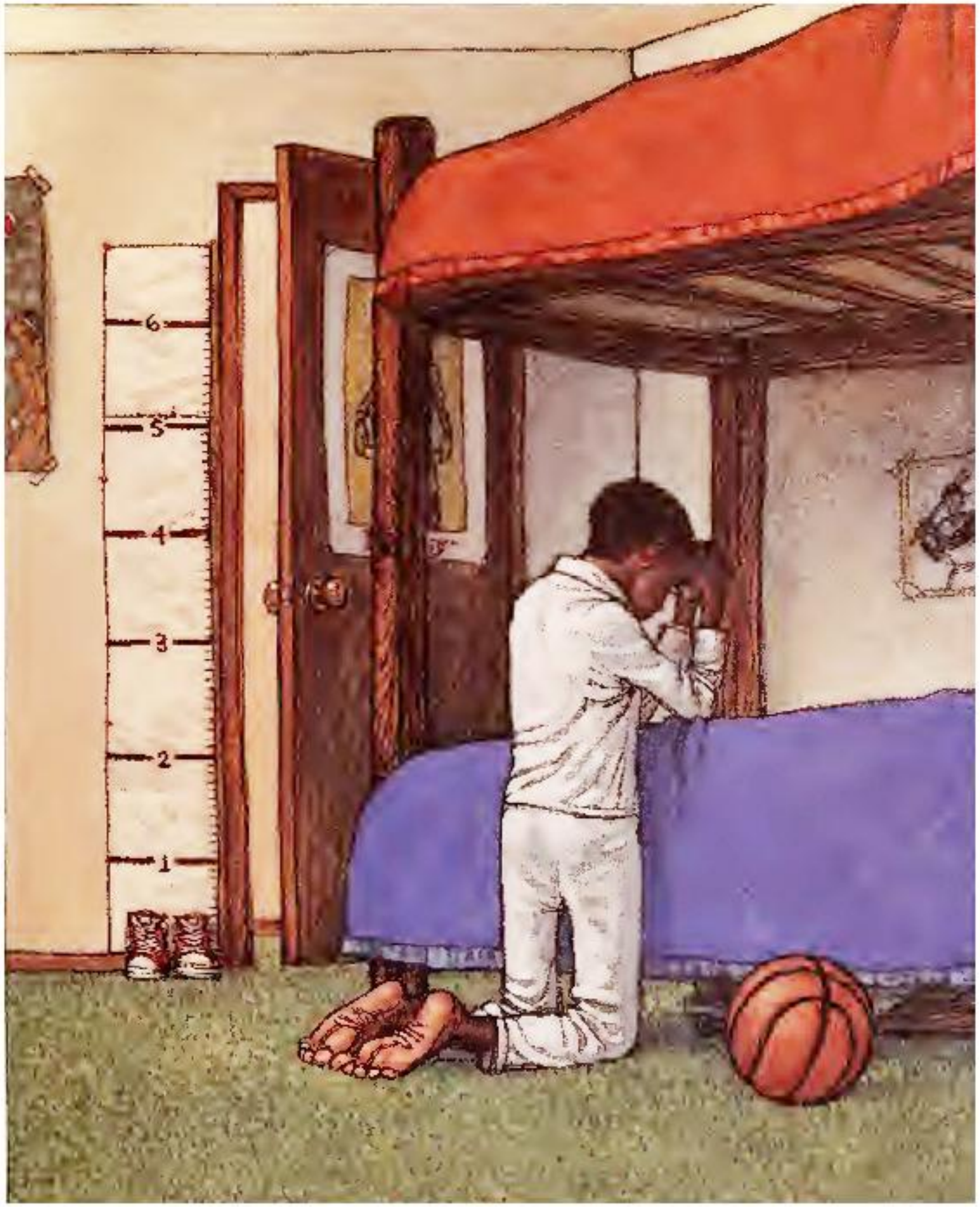

उस रात सोने के समय माइकल ने अपने पसन्दीदा खेल वाले जूते, दीवार पर टंगी लम्बाई नापने वाली चार्ट के पास रखे। तब अपने कपड़े बदल कर दुआ की और अपने बिस्तर पर कूद गया।

जब ममा कमरे में आईं, माइकल गहरी नींद सो चुका था। उसका चेहरा देख वे समझ गईं कि वह सपने में बास्केटबॉल खेल रहा होगा।

उसके बिस्तर के पास खड़ी हो ममा ने माइकल के जूतों में थोड़ा नमक बुरका। तब उसके सिराहने खड़ी हो एक दुआ बोली, जैसे वे अपने हरेक बच्चे के लिए बोलती थीं।

"या खुदा! मइकल की मदद कर। वह जितना उम्दा बन सकता है बन सके और जो कुछ भी वह करे उसे उम्दा तरीके से कर सके! और खुदा! क्या तू कल उसे आज से कुछ लम्बा बना सकता है? शुक्रिया। आमीन!"

उस रात के बाद माइकल जहाँ भी जाता अपने पसन्दीदा खेल के जूते ही पहनता, गिरजे तक में। उसने अपने भाइयों के साथ शनिवार को पार्क में जाना भी बन्द कर दिया। वह घर पर ही रहता और अभ्यास करता। पार्क में फिर से जाने के पहले वह कुछ लम्बा जो हो जाना चाहता था।

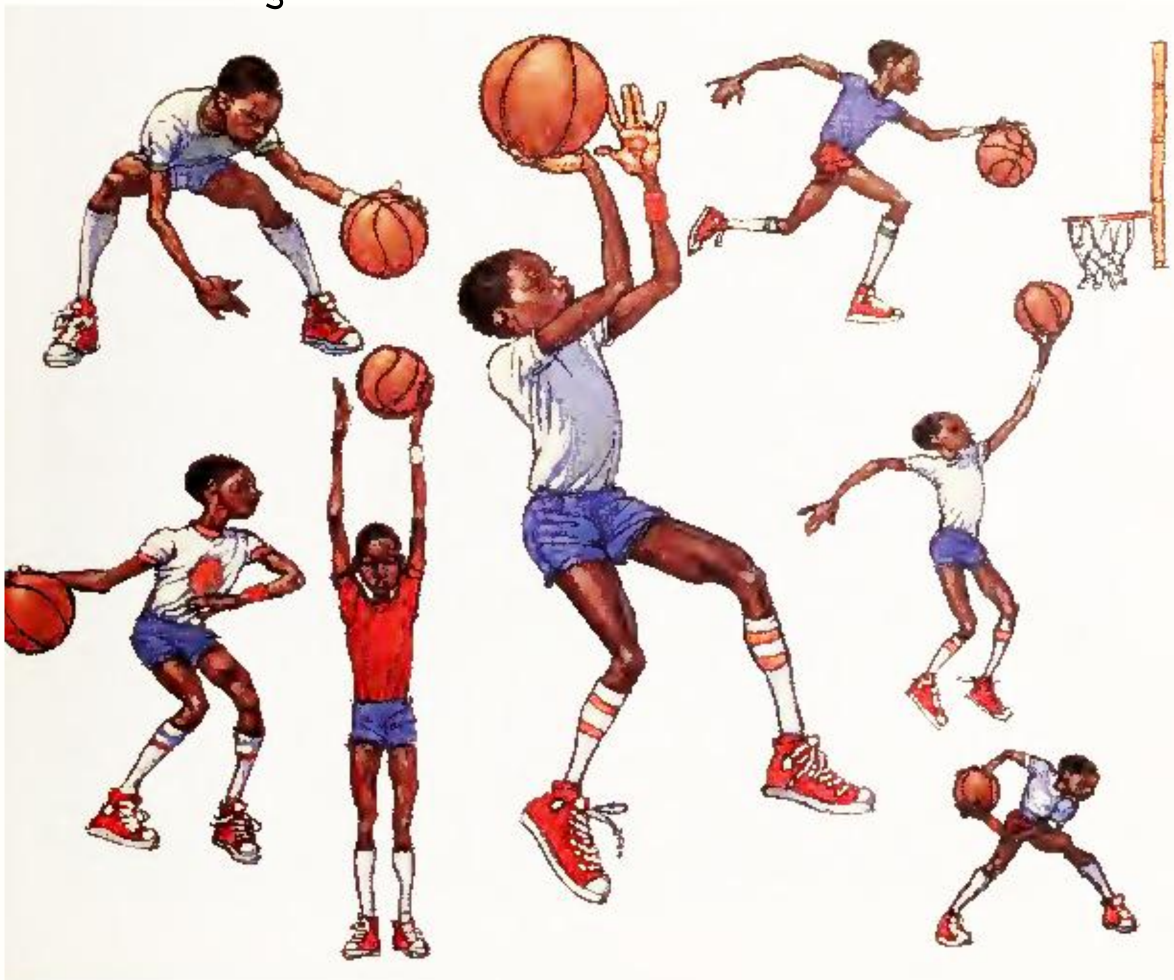

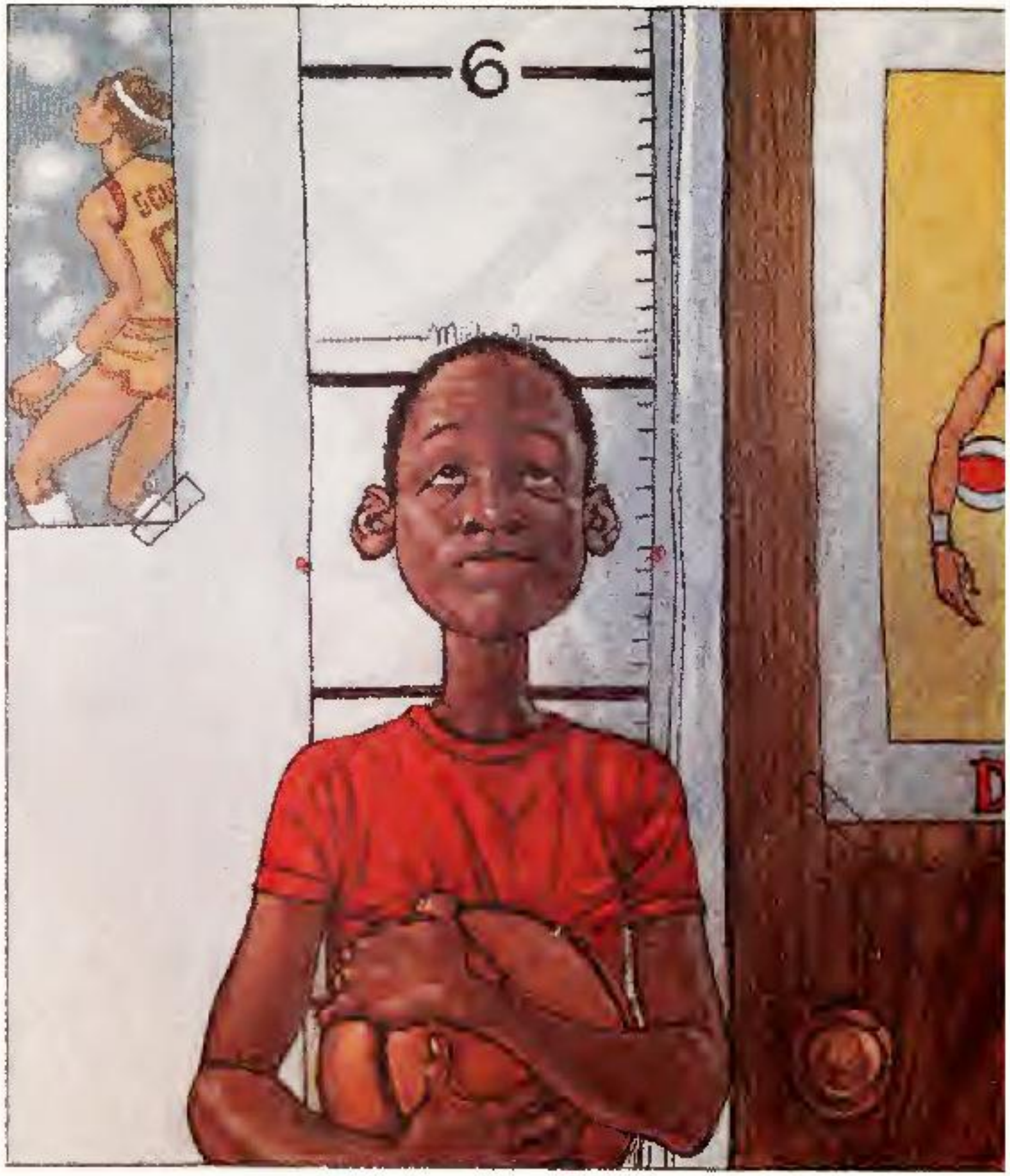

दो महीनों के अभ्यास, धीरज से इन्तज़ार करने और दुआ करने बाद माइकल लम्बाई नापने वाली चार्ट के पास खड़ा हुआ। वह इंच भर भी लम्बा नहीं हुआ था। वह मायूस ज़रूर हुआ, पर उसने भरोसा करना न छोड़ा। मुझे समय देना होगा जैसे ममा ने कहा था, माइकल ने मन ही मन सोचा। और उसने यही किया भी।

अभ्यास करते दो महीने और गुज़रे। पर फिर भी कुछ हासिल न हुआ। अब तो माइकल उदास हो गया। न केवल वह लम्बा नहीं हुआ था बल्की उसे लैरी और रॉनी के न खेलना भी अखरने लगा था। बस एक ही चीज़ थी जिसकी कमी उसे नहीं महसूस हुई थी, मार्क द्वारा सताए जाने की।

अगले शनिवार भी भाइयों ने माइकल को साथ ले जाने की कोशिश की। पर वह टस से मस न हुआ। ममा को फिक्र होने लगी थी। जब उन्होंने माइकल को अकेले सीढ़ियों पर बैठे देखा, उन्होंने डैडी से कहा, ''शायद तुम्हें बाहर जा माइकल से बात करनी चाहिए।''

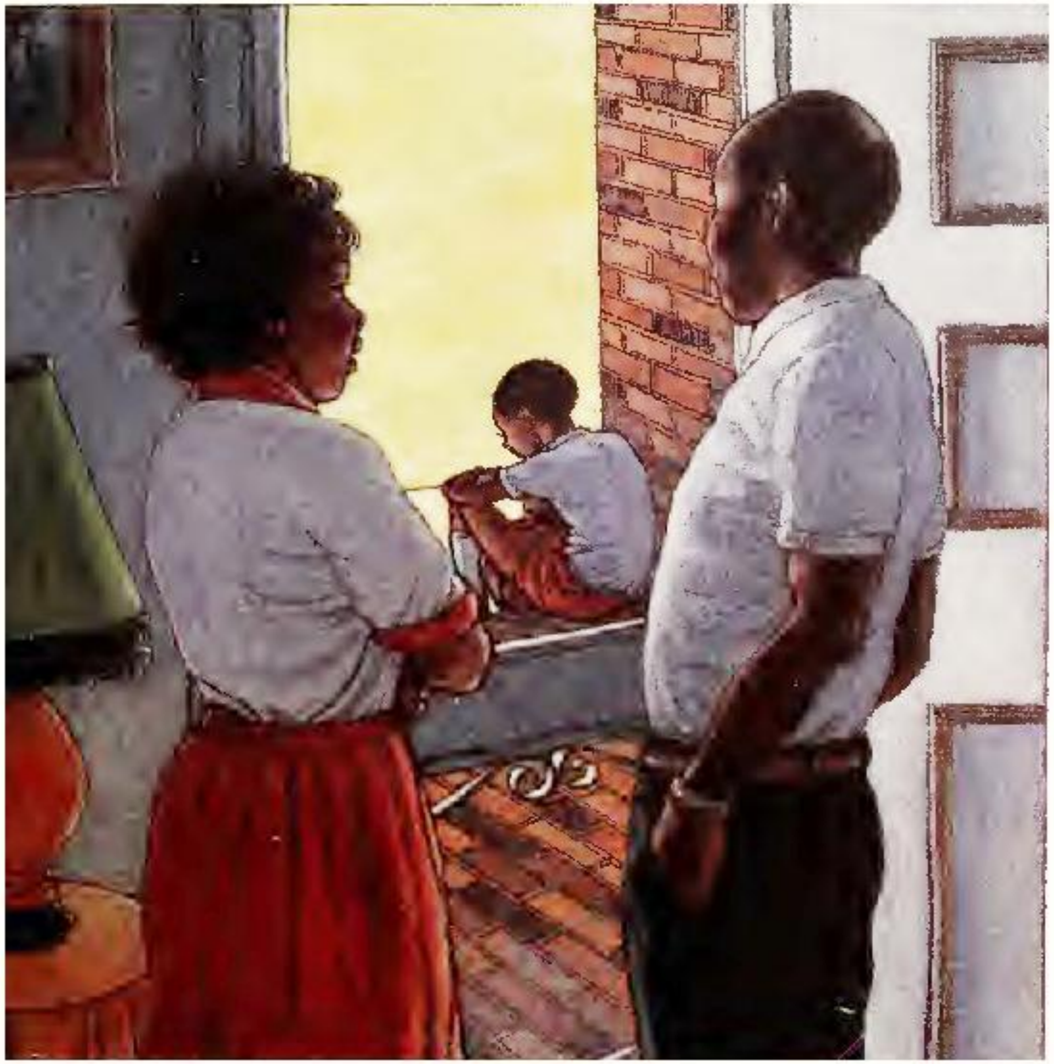

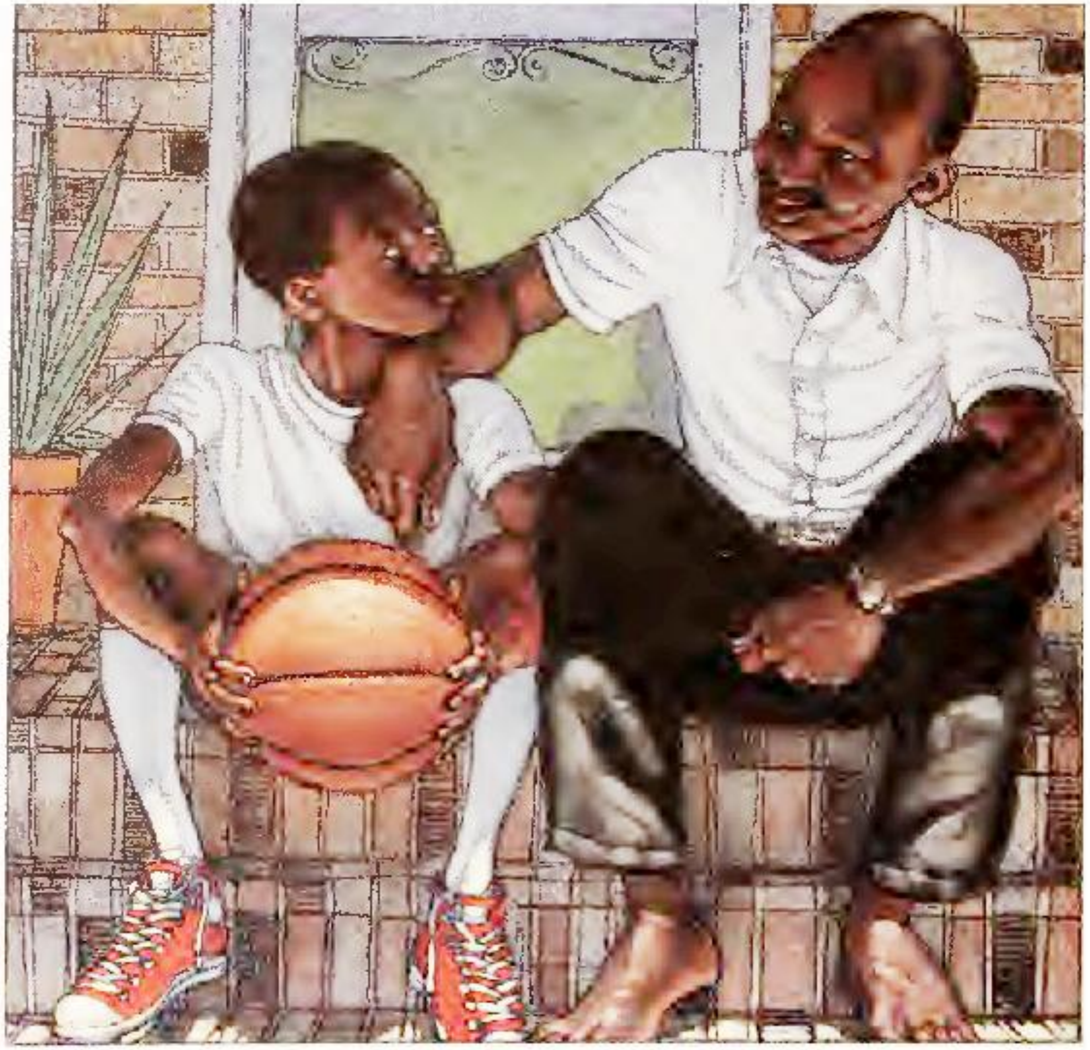

सो डैडी बाहर गए और माइकल के पास बैठे।

"क्या बात है बेटा? तुम अपने भाइयों कें साथ कई दिनों से पार्क गए ही नहीं हो। तुम ठीक तो हो?"

माइकल पहले तो चुप रहा। तब डैडी की ओर मुड़ कर बोला, "मैंने सोचा था कि मैं अब तक कम से कम कुछ इंच तो लम्बा हो जाऊँगा। पता है मैंने वह सब किया जो ममा ने कहा था। पर इसका कोई नतीजा नहीं मिला।"

"माइकल तुम लम्बे क्यों होना चाहते हो?" डैडी ने पूछा।

"अगर मैं लम्बा हो जाता तो एक उम्दा खिलाड़ी बन पाता और अपनी टीम की जीतने में मदद कर पाता," माइकल ने जवाब दिया।

"पर बेटा तुम तो वैसे भी उम्दा खिलाड़ी हो। और जीतने के लिए जो भी चाहिए होता है वह सब ठीक यहाँ है," डैडी ने उसकी छाती पर हाथ धर कहा। "लम्बे होने पर शायद तुम कुछ बेहतर खेल सको, पर उससे उतना फर्क नहीं पड़ेगा, जितना अभ्यास और संकल्प का पड़ता है। ये ही तुम्हें सच्चा विजेता बना सकेंगे।"

माइकल ने डैडी के कहे पर मिनट भर सोचा। तब उछल कर खड़ा हुआ और सरपट दौड़ पड़ा।

"अरे, कहाँ भागे जा रहे हो?" डैडी ने पीछे से हाँक लगाई।

"आज एक खेल है और मुझे पहले ही देर हो चुकी है," माइकल ने चीख कर जवाब दिया।

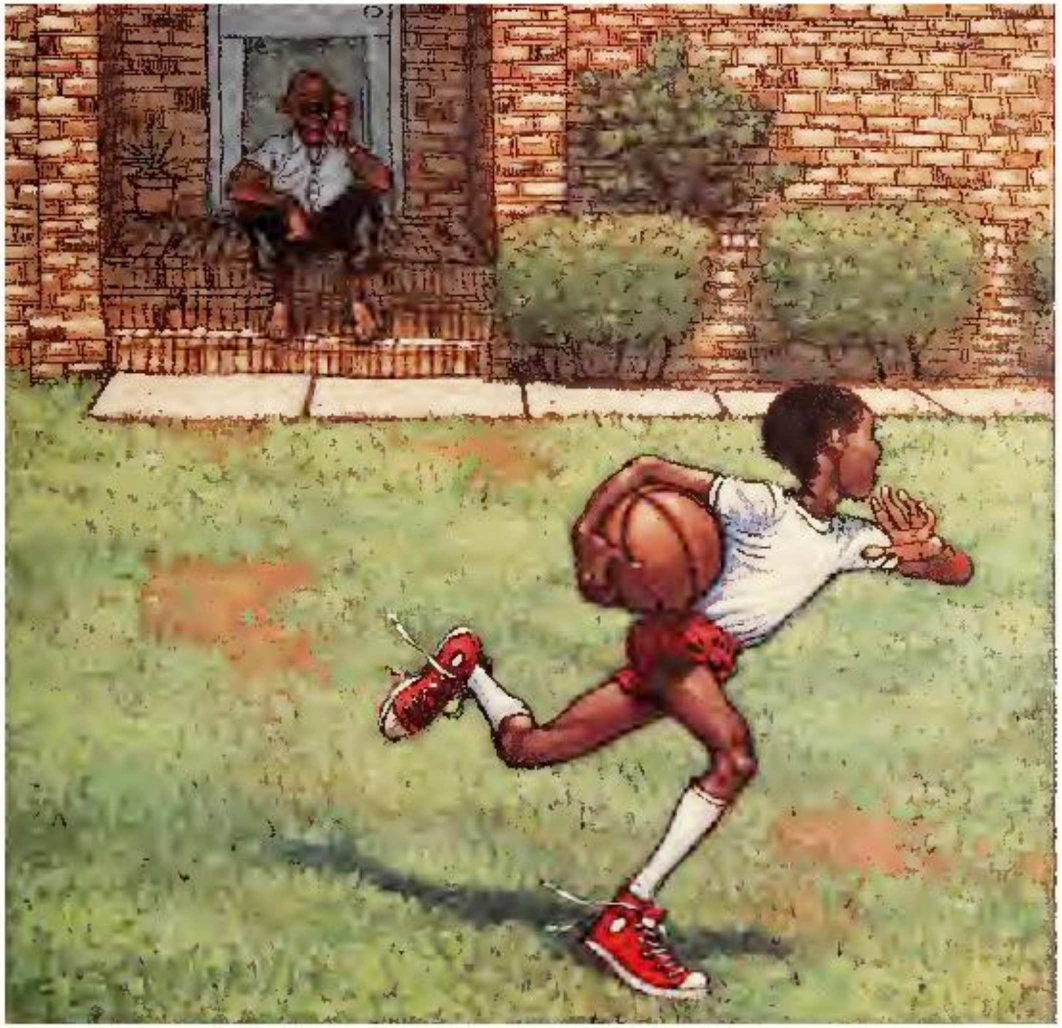

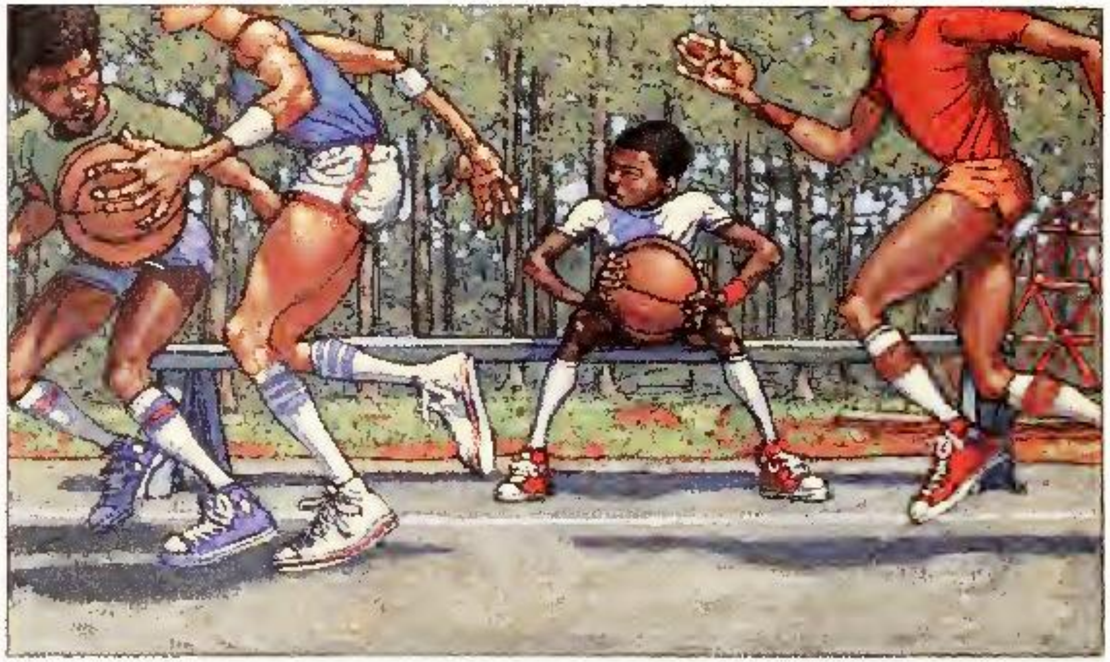

जब माइकल पार्क पहुँचा, खेल शुरू हो चुका था। वह इस उम्मीद से बेंच पर बैठ गया कि शायद उसे खेलने का मौका मिले। और मौका जल्द ही मिला भी। खेल खत्म होने को था और दोनों टीमों का स्कोर बराबर था। इतने में माइकल के टीम का एक खिलाड़ी, जॉन गिर पड़ा। उसके पैर में चोट आ गई।

यही माइकल का मौका था।

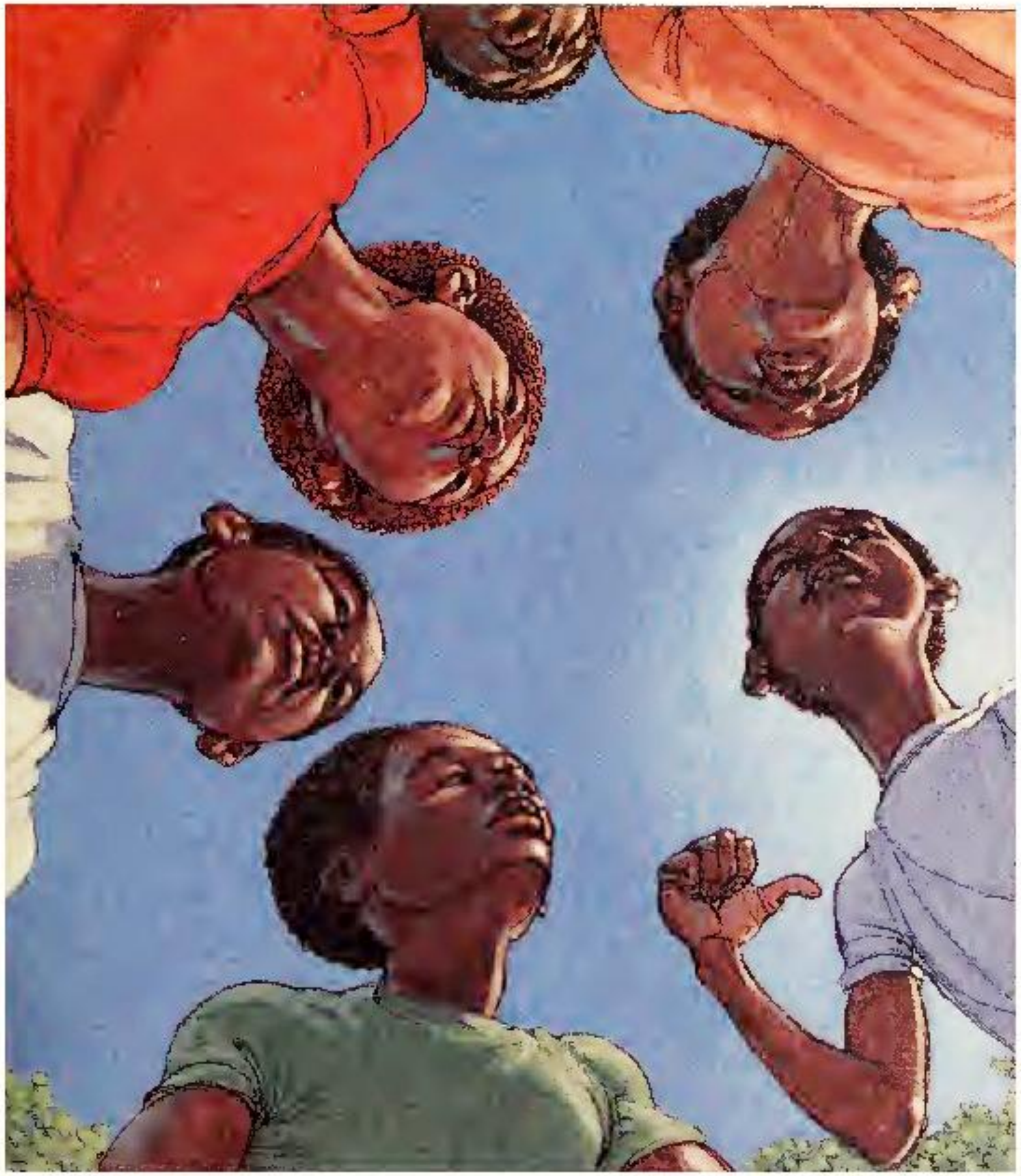

अब माइकल अपनी टीम के खिलाड़ियों के साथ एक झुंड बना खड़ा था।

"सब सुनो, फिलहाल हम बराबर हैं। हमें जीतने के लिए बस एक ही पॉइन्ट की ज़रूरत है। बताओ कौन बास्केटबॉल में बॉल उछालेगा?" रॉनी ने माइकल की ओर देखते पूछा। माइकल आत्म-विश्वास से भरा था। उसने कहा, "मैं यह करूंगा।"

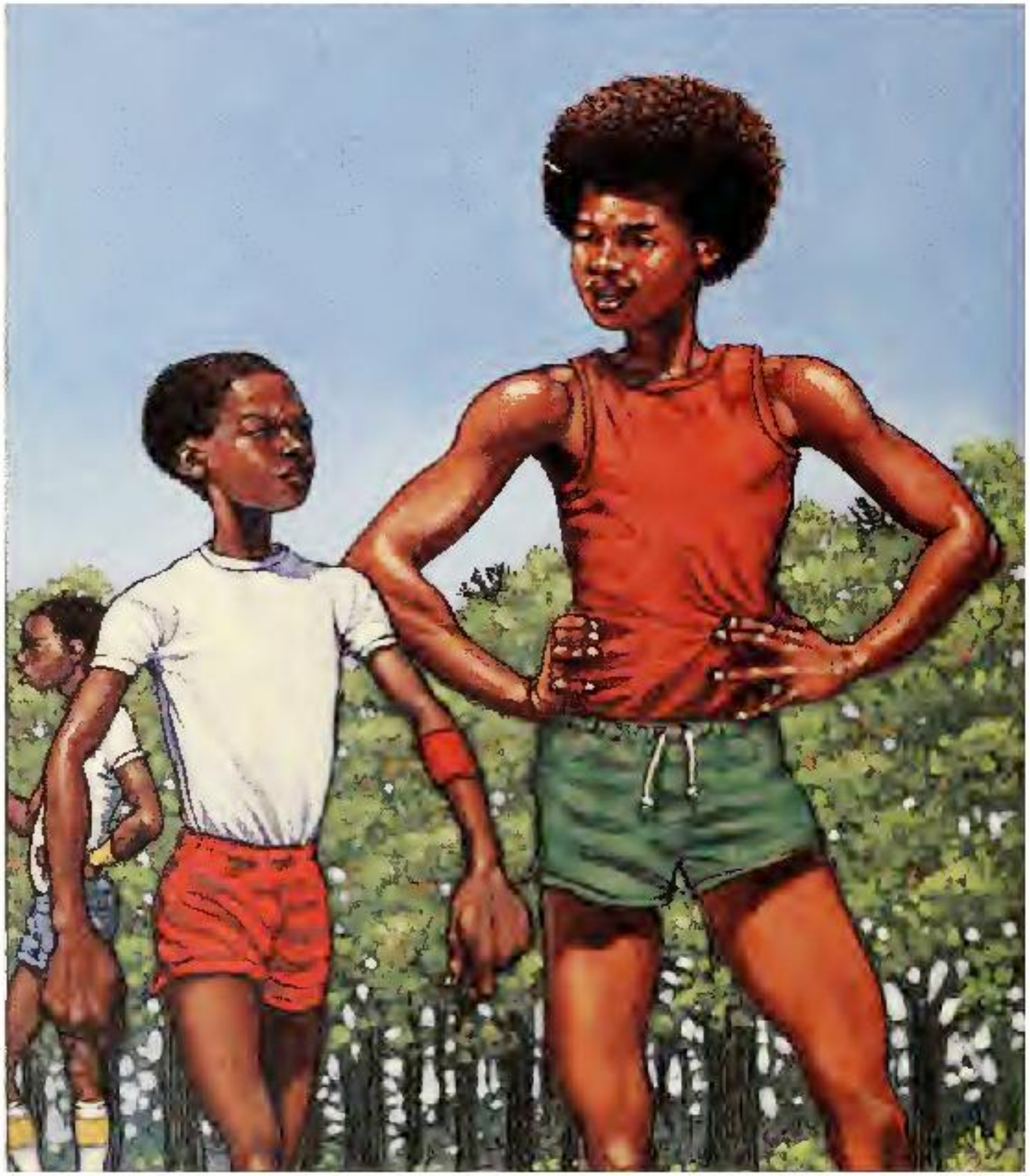

जब सीटी बजी खेल फिर शुरू हुआ। मार्क हमेशा की तरह माइकल पर तानाकशी करने लगा।

"अरे तुम अभी भी बड़े लड़कों के साथ खेलने की कोशिश कर रहे हो?" मार्क ने तंज कसा।

पर माइकल ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह लम्बा न भी हो, लगातार अभ्यास तो करता रहा था। और आज तो उसने जीतने का निश्चय कर लिया था।

लॉरी ने गेंद माइकल की ओर उछाली। माइकल ने उसे बखूबी थाम ली। उसे एक पल जमीन पर उछालने के बाद वह उसके साथ आगे दौड़ पड़ा।

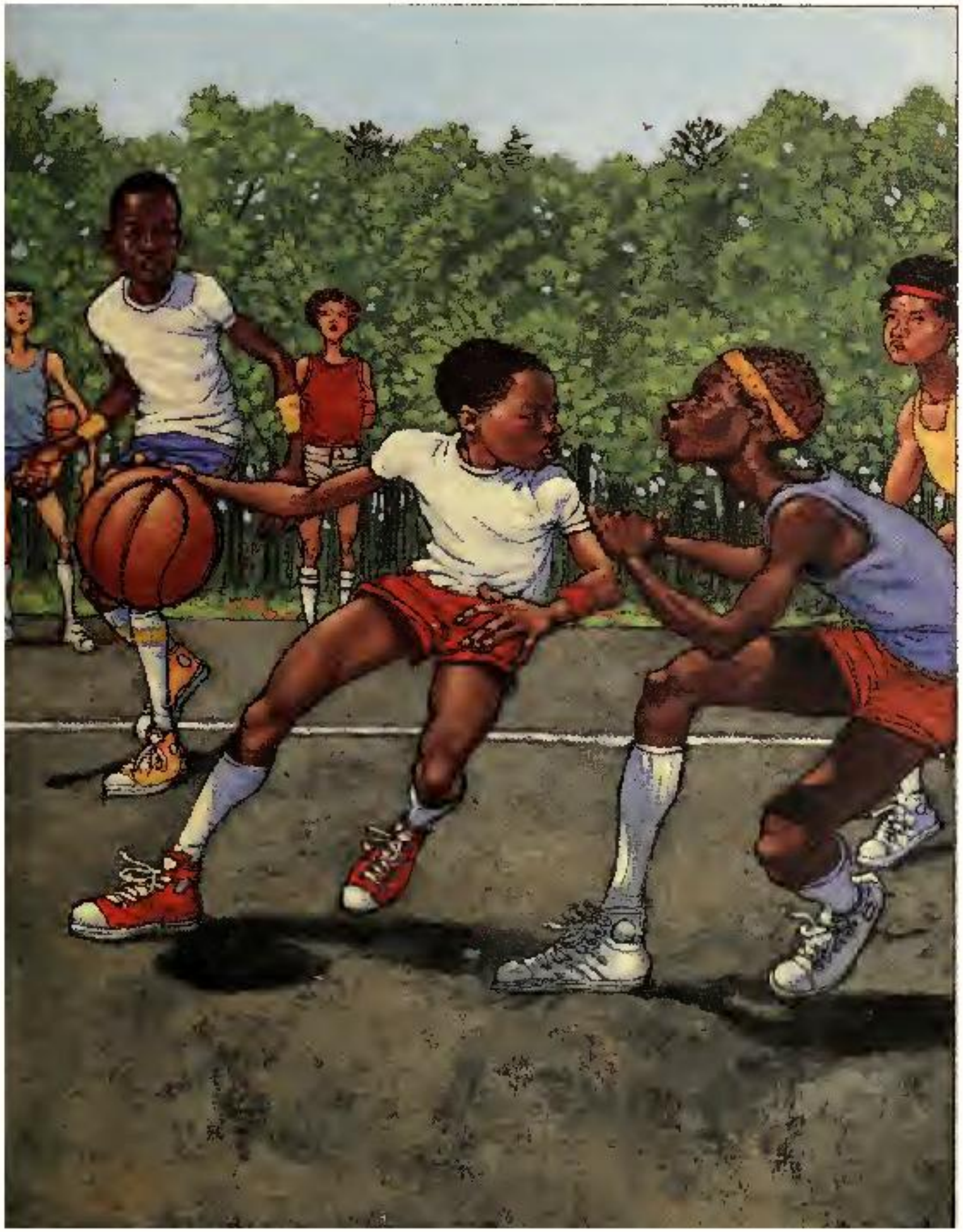

जैसे ही वह मार्क के पास पहुँचा माइकल अपने दाहिनी ओर मुड़ा। मार्क भी उसके साथ दाहिने सरका। तब माइकल फुर्ती से मार्क के बांई ओर मुड़ा और मार्क के पीछे से गेंद उछाली। गेंद दूसरी टीम के खिलाड़ियों के सिर के ऊपर से उड़ती हुई सीधे हूप में गई। दो पाइन्ट! खेल खत्म हुआ माइकल की टीम जीत गई थी!

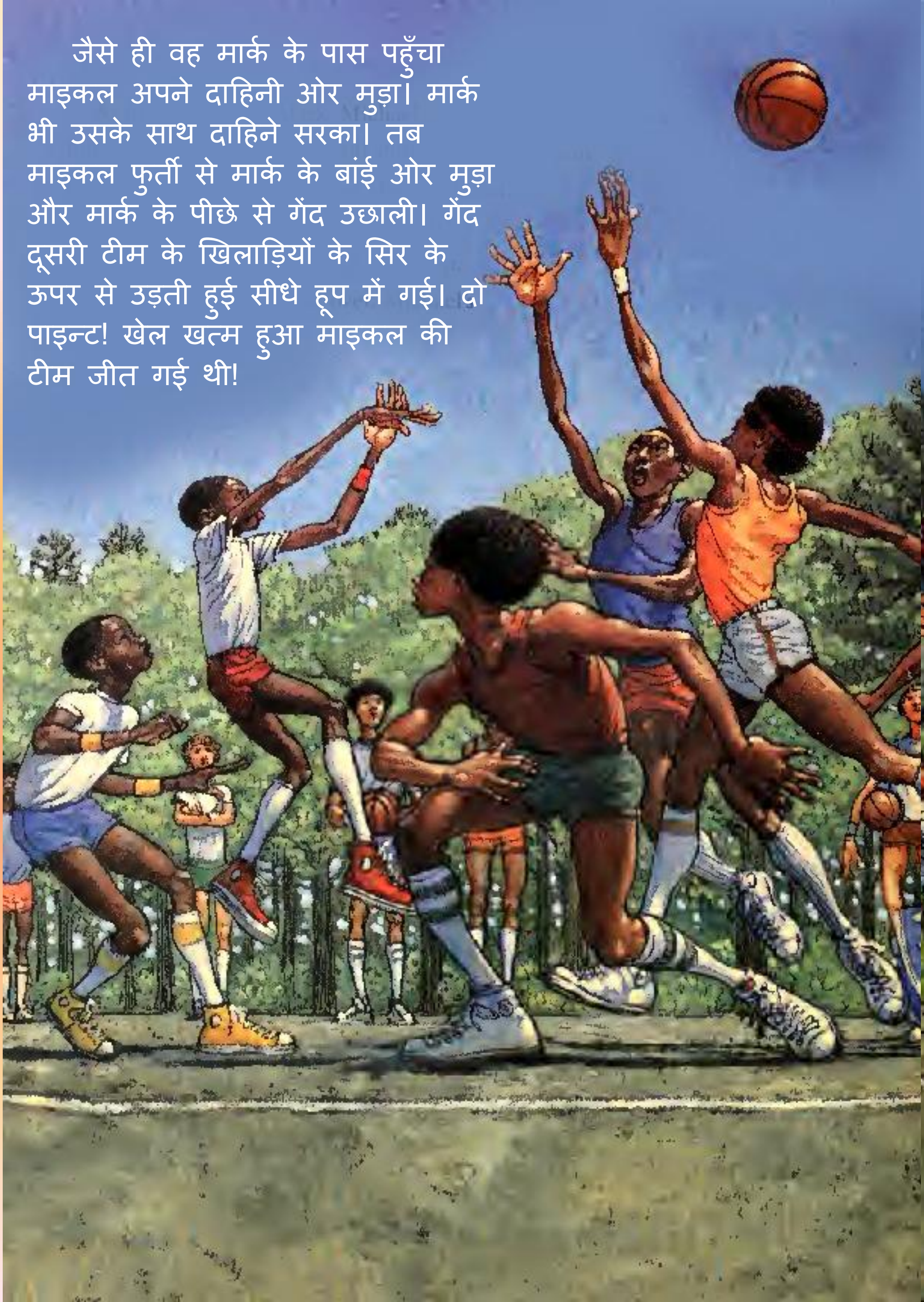

यह सब ठीक वैसे हुआ था जैसे माइकल कल्पना करता रहा था। जब उसे अहसास हुआ कि उसने क्या कर दिखाया है, वह पार्क से दौड़ा और घर पहुँचने तक कहीं न रूका।

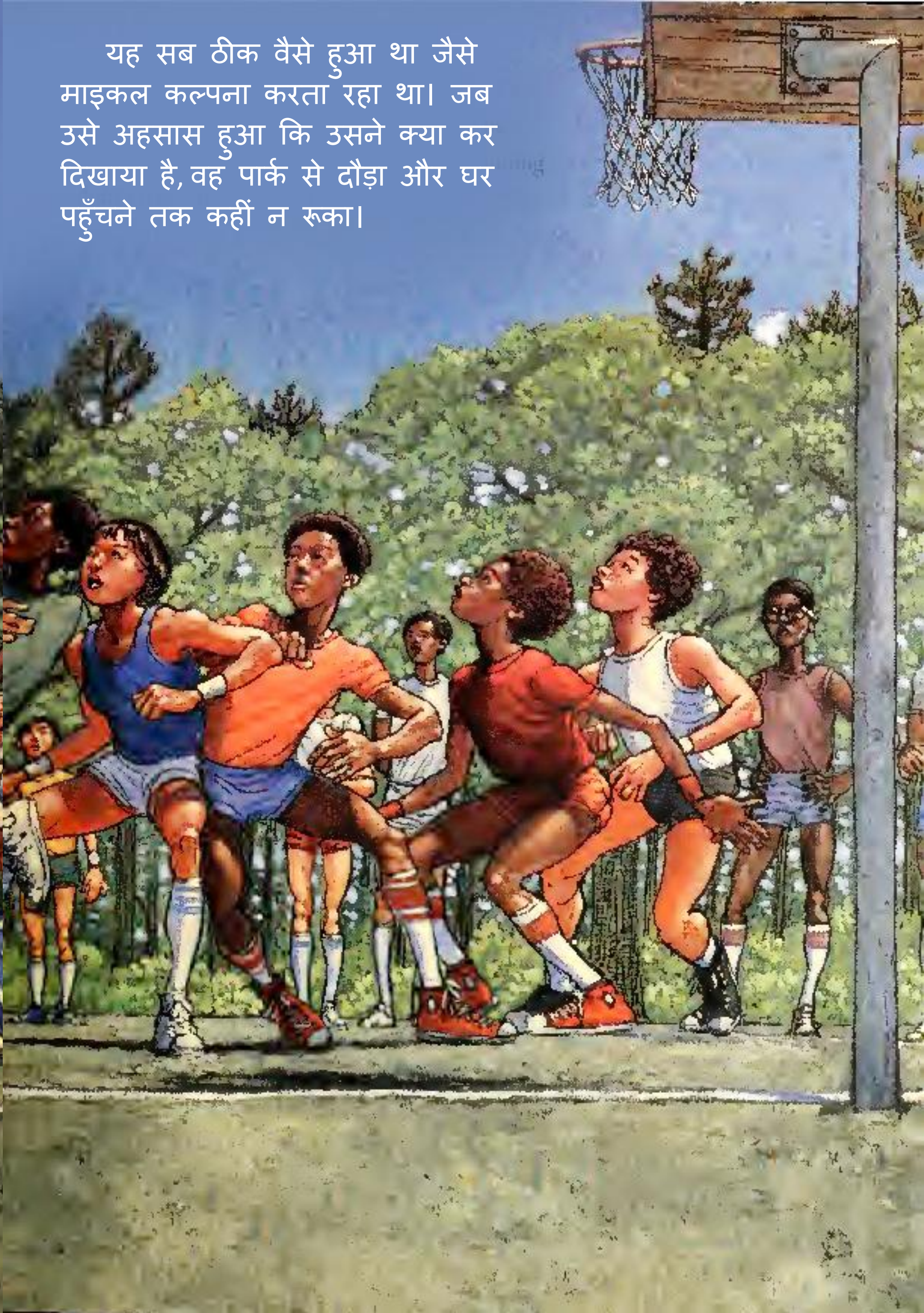

दरवाज़े से अन्दर घुसते ही वह चीखा, "डैडी मैंने कर दिखाया। मैंने अपने से लम्बे लड़के के सिर के ऊपर से गेंद उछाली और जीत गया।"

रॉनी और लैरी भी उसके पीछे दौड़ते आए और जीत के जश्न में शामिल हो गए। "सही है छुटके, तुमने कर दिखाया। तुमने ही हमारे लिए खेल जीता।"

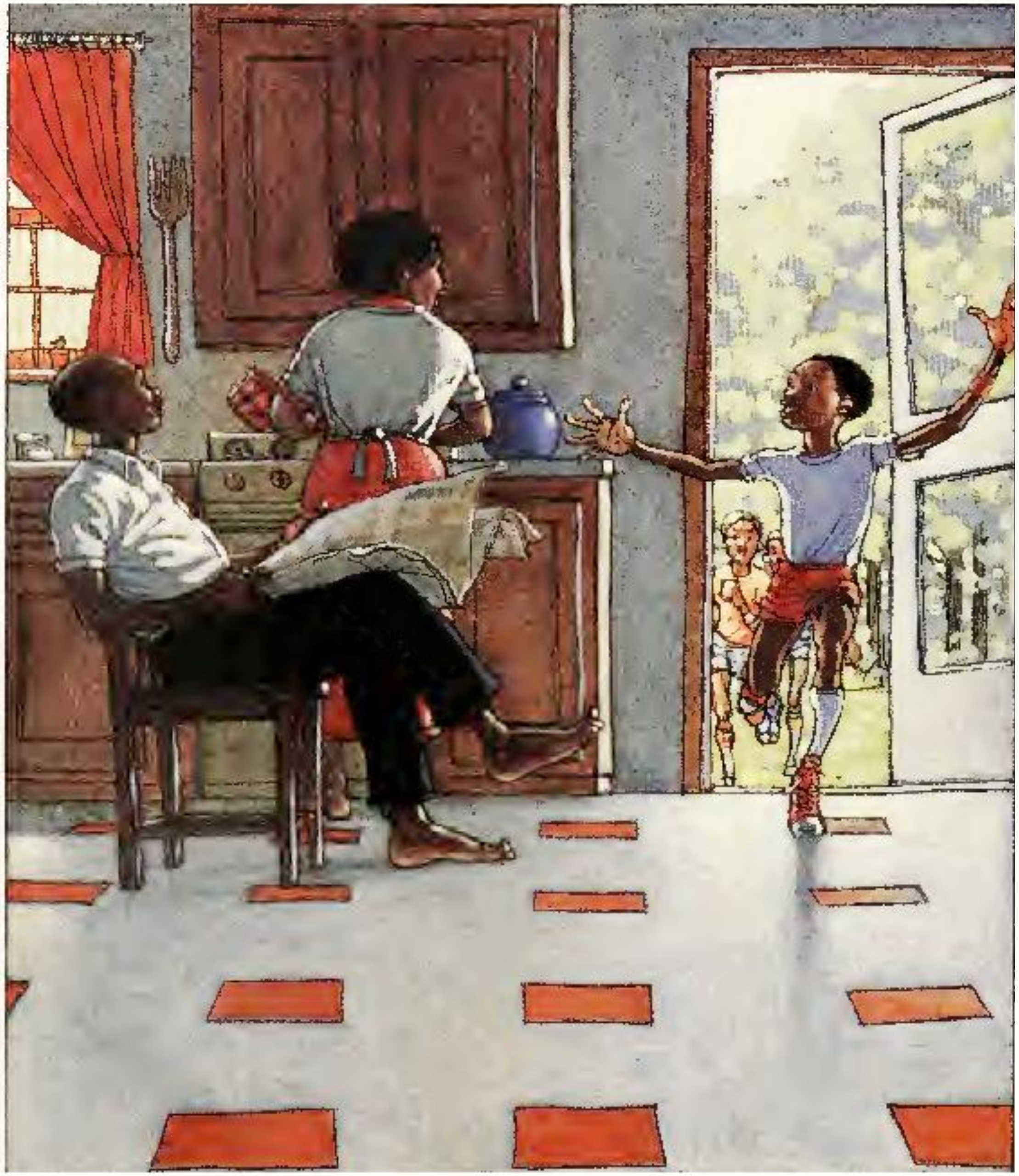

माइकल को याद आया कि रॉनी ने किस तरह उसकी ओर देखा था। वह बोला, "नहीं खेल तो हम सबने जीता। पर सितारा तो मैं ही था!"

सब हंस पड़े।

उस दिन के बाद से ममा ने माइकल के जूतों में नमक बुरकना बन्द कर दिया। पर माइकल ने धीरज रखना, मेहनत और दुआ करना बन्द नहीं किया।

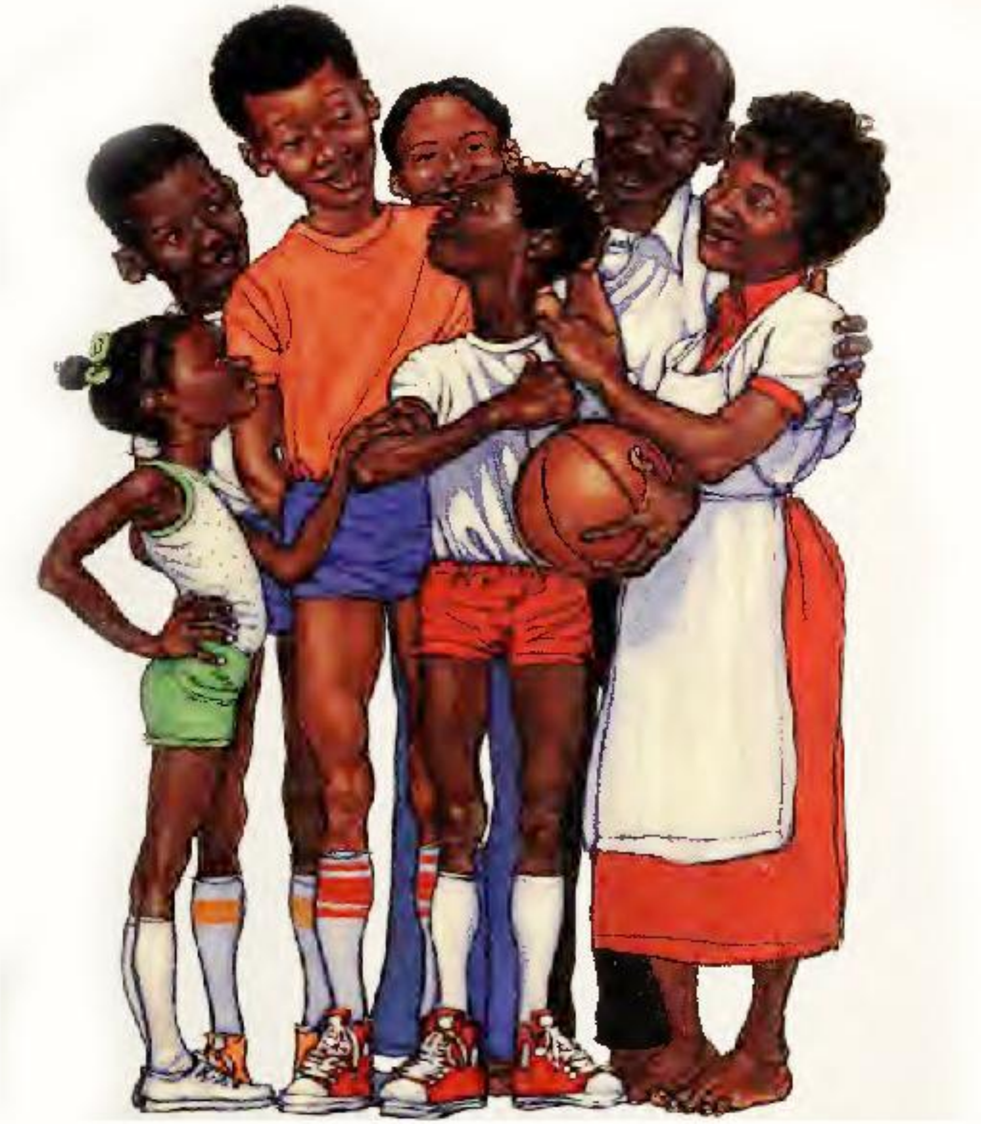

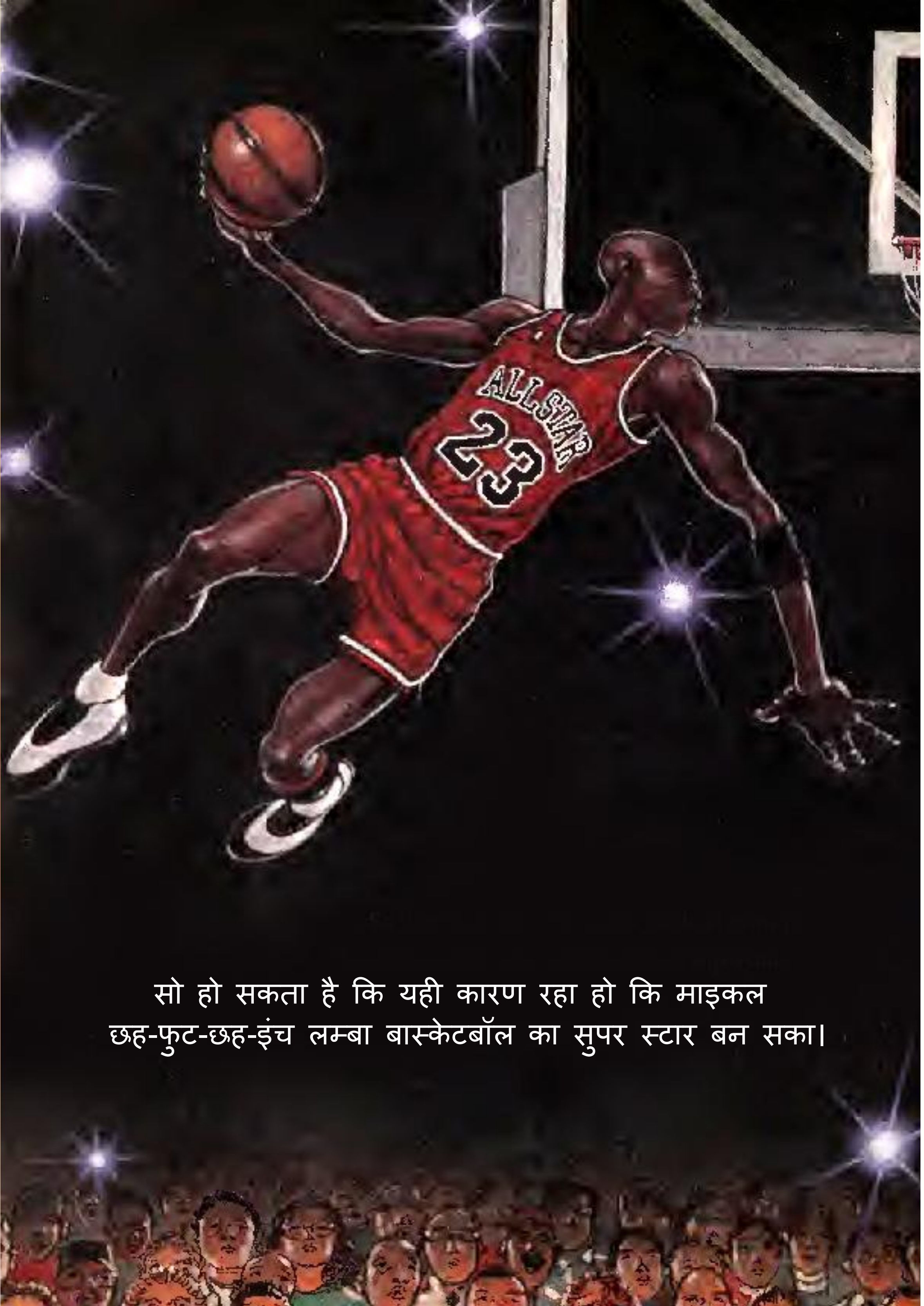

सो हो सकता है कि यही कारण रहा हो कि माइकल
छह-फुट-छह-इंच लम्बा बास्केटबॉल का सुपर स्टार बन सका।

माइकल जॉर्डन

इस नाम का ज़िक्र भर सबके मन में बेहतरीन बास्केटबॉल की छवियाँ उभारता है। पर जब माइकल छोटे थे उन्होंने अपना बास्केटबॉल का सपना लगभग त्याग ही दिया था। क्योंकि उन्हें लगने लगा था कि वे उस खेल को खेल पाने के लिए वे पर्याप्त लम्बे नहीं हैं, जिसने उन्हें बाद में इतनी ख्याति दी। उस निराशा के वक्त उनकी माँ और पिता आगे आए और उन अमूल्य सीखों को साझा किया जो चैम्पियन बनने में मददगार होते हैं - धैर्य, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत।

डेलोरिस जॉर्डन ने, जो माइकल की माँ हैं, माइकल की बहन रोज़लिन के साथ इस मर्मस्पर्शी और प्रेरणादायी सत्य-कथा को रचा, जो केवल जॉर्डन परिवार ही सुना सकता था। यह कहानी आस्था और उम्मीद की है। और यह रेखांकित करती है कि कोई भी परिवार साथ मिल कर किस तरह किसी बच्ची या बच्चे के सपने को साकार करने में मदद कर सकता है।